डॉ विभूति भूषण

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

2. शक

शक मध्य एशिया के खानाबदोश कबीलाई थे| मौर्योत्तर काल में इन्होने भी भारत की ओर रुख किया| इन्होने हिन्द यूनानियों को सत्ता से हटाकर अपना राज्य स्थापित किया| भारत में इनकी कई शाखाएँ थी जो निम्न है:

शाखा	राजधानी	संस्थापक
पश्चिमोत्तर शाखा	तक्षशिला	माओस
उत्तरी शाखा	मथुरा	षोडास
दक्षिणी शाखा	नासिक	सिमुक
पश्चिमी शाखा	उज्जयिनी	चष्टन

शको के पश्चिमोत्तर शाखा की राजधानी तक्षशिला थी| इस शाखा का प्रथम शासक माओस (20BC-20AD) था| इस वंश के कुछ अन्य शासक एजेज और एजेलिसेज था|

शको के उत्तरी शाखा की राजधानी मथुरा थी| इसका प्रथम शक शासक राजुल या राजउल था| उसके बाद उसका पुत्र षोडास राजा बना| मथुरा के शक पहले मालवा क्षेत्र में रहते थे, जिन्हें 57 BC में विक्रमादित्य नामक शासक ने पराजित किया| इसके बाद शक भागकर मथुरा आ गए थे|

शको के दक्षिणी शाखा की राजधानी नासिक थी| इसके दो प्रसिद्ध शासक भुमक और नहपान थे| वे अपने आपको क्षयरात क्षत्रप कहते थे| नहपान (119AD-124AD) के राज्य में काठियावाड, दक्षिणी गुजरात. पश्चिमी मालवा, उत्तरी कोंकण, पूना आदि सम्मिलित थे| उसने महाराष्ट्र के बड़े भूभाग को सातवाहन राजाओं से छिना था| हालाँकि सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी ने इसे पराजित किया| नहपान का दामाद सातवाहन शासक ऋषभदत्त या उषावदत्त था|

शको के पश्चिमी शाखा की राजधानी मालवा अथवा उज्जैन थी| इसके शक शासको में सबसे प्रसिद्ध रुद्रदामन था जबकि पहला स्वतंत्र शासक चंटन था| रुद्रदामन के बारे में जानकारी का प्रमुख स्त्रोत जूनागढ़ अभिलेख है|

रुद्रदामन व्याकरण राजनीती, संगीत एवं तर्कशास्त्र का विद्वान था| मालवा के शक शासको में अंतिम रूद्र सिंह तृतीय था, जिसकी गुप्त शासक चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने हत्या कर दी|

शक शासकों का भारत पर प्रभाव

शक घुड़सवारी का बेहतर प्रयोग करते थे| इनके आने से सेना में घुड़सवारी तेज हुई| शकों का चांदी मार्ग पर नियंत्रण था| ऐसे में इन्होने चांदी के सबसे अधिक सिक्के जारी किये|

प्रभाव की दृष्टि से शको की पश्चिमी शाखा सबसे महत्वपूर्ण है| इसमें रुद्रदामन महान शासक हुआ| उसने सातवाहन शासक वशिष्ठपुत्र पुलमावी को पराजित किया| उसने गिरनार पहाड़ी पर संस्कृत का पहला लेख जारी किया| उसने सुर्दशन झील का बिना पैसे लिए स्वयं के खर्च पर पुनर्निमाण कराया|

सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य ने काठियावाड़, गुजरात में कराया| इसे अशोक, रुद्रदामन और स्कन्दगुप्त ने जीर्णोद्धार करवाया| रुद्रदामन ने इस हेतु जनता से कोई टैक्स नहीं लिया|